प्रस्तावना

भारतीय शास्त्रीय संगीत, विश्व की सर्वाधिक प्राचीन, ऐतिहासिक, रमणीय, मधुर व रंजक परंपरा है। जिसने पुरे विश्व को अपनी ओर आकर्षित करते हुए इसे जानने, समझने व सिखने के लिये प्रेरित किया, साथ-साथ इस ऐतिहासिक परंपरा के साथ जुड़ने की लालसा भी उनके मन में उत्पन्न की है। संगीत कोई भी हो चाहे वह भारतीय हो या पाश्चात्य उसमें गाये-बजाये जाने वाले स्वरों के माध्यम से उत्पन्न भाव उसका मुख्य आकर्षण है। तभी तो संगीत को विश्व कक्षा की भाषा या बोली समझी जाती है। यदि हम भारतीय संगीत की बात करें तो उसमें एक ऐसी ताकत तथा विशिष्टता है कि श्रोता चाहे भारतीय हो या पाश्चात्य वह उसके मोह में अवश्य ही आ जाता है ।

जैसा की हम जानते है की संगीत का प्रयोजन मनोरंजनार्थ किया जाता है तथा यह परंपरा वेदकालीन या उससे भी प्राचीन मानी जाती है क्योंकि देवलोक में भी विभिन्न देवी-देवता अपने मनोरंजनार्थ "संगीत" का प्रयोग करते थे , जिसके प्रमाण हमें कई शास्त्रीय वेदों, ग्रंथो व धार्मिक पुस्तकों में मिलते है। देवी-देवताओं की यही परंपरा को आगे चलकर राजा-महाराजा, बादशाहों व नवाबों ने भी कायम रखी। जिसमें वे विभिन्न गायकों, वादकों, नृत्यों से अपना मनोरंजन करते थे। देवी-देवताओं और राजा-महाराजाओं की इन्ही परंपराओं ने इस भारतीय शास्त्रीय संगीत को आज तक संजोए रखते हुए उसे हम तक सुरक्षित रूप में पहुंचाया है।

राजा-महाराजा और बादशाहों में ऐसे कुछ विशिष्ट राजा-महाराजा व बादशाह हो गये जिनके सांगीतिक योगदान के लिये उन्हें आजीवन याद रखा जायेगा । जिनके कार्यो के कारण आज संगीत की नित-नवीन सांगीतिक पिढ़ी आकार ले रही है और उन्हीं के प्रयास से प्राचीन भारतीय शास्त्रीय संगीत आज

अपने यौवन अवस्था में प्रस्थापित हो रहा है। जिसमें विभिन्न शास्त्रकार, साहित्यकार, कलाकार इत्यादिओं का भी महत्वपूर्ण व बहुमूल्य योगदान रहा है। जिनके अथक परिश्रम व कठोर तपस्या का फल है कि आज हम विभिन्न – नित नवीन राग-रागिनीयाँ व शास्त्रीय साहित्य का अभ्यास इतनी गहराई से व आसानी से कर सकते है। शास्त्र में वर्णीत हमारी सांगीतिक धरोहर इन्हीं शास्त्रकारों, साहित्यकारों, कलाकारों की संपत्ति है, तभी तो इन शास्त्रों का अनुपालन करते हुवे हम हमारे संगीत के प्रायोगिक व शास्त्रपक्ष को किसी भी स्तर के श्रोताओं को बड़ी ही आसानी से समझा सकते है। उन शास्त्रकारों और साहित्यकारों ने संगीत जैसी जटील विद्या को अपने ज्ञान, अनुभव व मेहनत से सीधा सरल बना दिया है। शास्त्र का अनुपालन करने वाली हमारी यह सांगीतिक धरोहर इसीलिए ही शास्त्रीय संगीत के नाम से जानी व पहचानी जाती है। इस परंपरा में पं.भरत, पं. शारंगदेव. पं.लोचन, पं.अहोबल, पं.श्रीनीवास इत्यादि कई नाम प्रचलित व उल्लेखनीय है, जिन्होंने अपनी महेनत, अनुभव व सांगीतिक अभ्यास से कई बहुमूल्य साहित्य व शास्त्रों का निर्माण करते हुए हमारी प्राचीन सांगीतिक धरोहर को संजोए रखने में व सुरक्षित रखने में अपना बहुमूल्य एवम् अविस्मरणीय योगदान दिया है।

इसी परम्परा में जब हम आधुनिक काल के सांगीतिक शास्त्रकार, साहित्यकार, कलाकार, गुरू, वाग्गेयकार इत्यादि का स्मरण करते है, तो एक अविस्मरणीय छबि अनायस ही हमारे दृष्टि सन्मुख उपस्थित होती है, जिन्हें हम "संगीतरत्न उस्ताद मौलाबक्ष" के नाम से पहचानते है। उस्ताद मौलाबक्ष एक ऐसी विभूति हो गई, जिन्होंने न केवल संगीत कलाकार के रुप में अपना योगदान दिया है, बल्कि एक उत्तम वाग्गेयकार, व्यवस्थापक, गुरु, रचनाकार तथा शास्त्रकार, के रुप में भी उनका बहुमूल्य योगदान रहा है।

उस्ताद मौलाबक्ष व बड़ौदा नरेश सयाजीराव गायकवाड़ तृतिय ने मिलकर भारतीय शास्त्रीय संगीत के भविष्य को सुनहरा व सुरक्षित रखने हेतु गायन शाला की स्थापना की। उस्ताद मौलाबक्ष ने समाज में संगीत का प्रचार-प्रसार किया व संगीत श्रोताओं को आजीवन संगीत सीखने, समझने का प्रयोजन करते हुए भारतीय शास्त्रीय संगीत को नवीन दिशा प्रदान की ऐसे महान कलाकार उस्ताद मौलाबक्ष का कार्य वंदनीय है । उस्ताद मौलाबक्ष ने संगीत शिक्षण से संबधित विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला हुआ दिखाई देता है।

एक प्रतिभाशाली, कला-संपन्न, विविध भाषा सिद्ध, कलाकार उस्ताद मौलाबक्ष ने संगीत की दुनिया में नवीनता की नींव रखते हुए भारतीय शास्त्रीय संगीत के भविष्य को सुनहरा व सुरक्षित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उस्ताद मौलाबक्ष द्वारा स्थापित गायन शाला के १३३ वर्ष बितने के बाद भी जब इस अदभूत् कला के विषय में अपना संशोधन कार्य कर रहा हूँ तो इस विषय में आज भी रोचकता व नीत-नवीनता का आभास होता है । सर सयाजीराव गायकवाड़ की प्रेरणा एवं उस्ताद मौलाबक्ष के प्रयत्नों से प्रस्थापित इस ऐतिहासिक फॅकल्टी ऑफ परफोर्मिंग आर्ट्स में से ही मैंने अपनी संगीत की अनुस्नातक की पदवी हाँसील की है तो इस विषय पर संशोधन करना मैं अपना कर्तव्य समझता हुँ। इस संशोधन कार्य से उस्ताद मौलाबक्ष के सांगीतिक योगदान तथा दुर्लभ एवं अति महत्वपूर्ण ग्रंथ-साहित्य से पुरे संगीत जगत को अवगत् करवाना ही इस संशोधन कार्य का मुख्य हेतु माना गया है।